This question paper contains 2 printed pages.

16/5/10

Your Roll No. ....

F

Sl. No. of Ques. Paper	**: 1222**
Unique Paper Code	**: 205202**
Name of Paper	**: हिन्दी प्रश्नपत्र V— उत्तर मध्यकालीन कविता**
Name of Course	**: B.A. (Hons.) Hindi**
Semester	**: II**
Duration	**: 3 hours**
Maximum Marks	**: 75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'रहीम जीवन के मार्मिक अनुभवों के कवि हैं।'— इस कथन की विवेचना कीजिए।

अथवा

देव की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। 15

2. बिहारी की शृंगार भावना पर विचार कीजिए।

अथवा

'भूषण की काव्य-भाषा दर्प और ओज का उदाहरण है।'— इस कथन की समीक्षा कीजिए। 15

3. घनानंद 'प्रेम के पीर' के कवि हैं— इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

गिरिधर के काव्य का मूल स्वर नीतिपरक है— सोदाहरण विचार कीजिए। 15

4. किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नांहिं।
रहिमन मैन-तुरंग चढ़ि, चलिबो पावक माहिं।।

(ख) देव न देखति हौं दुति दूसरी, देखे हैं जा दिन ते ब्रज-भूप मैं,
पूरि रही री वही धुनि कानन, आनन आन न ओप अनूप मैं;
ए अँखियाँ सखियाँ न हमारियै जाय मिली जलबुंद ज्यौं कूप मैं,
कोटि उपाय न पाइए फेरि, समाय गई रँगराय के रूप मैं।।

(ग) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्‌यौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै धनआँनद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।। 8+8

5. दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं **दो** का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए:

(क) **निर्देश : भाषा-सौंदर्य**

मिलि चंदन-बेंदी रही गोरें मुँह, न लखाइ।
ज्यों ज्यों मद-लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरति जाइ।।

(ख) **निर्देश : प्रकृति-सौंदर्य**

बायु बहारि-बहारि रहे छिति, बीथीं सुगंधनि जातीं सिँचाई।
त्यौं मधुमाँते-मलिंद सबै, जय के करषान रहे कछु गाई।।
मंगल-पाठ पढ़ैं 'द्विजदेव' सबै बिधि सौं सुखमा उपजाई।
साजि रहे सब साज घने, बन मैं ऋतुराज की जानि अवाई।।

(ग) **निर्देश: भाव-सौंदर्य।**

साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार
जब लगि पैसा गाँठ में, तब लगि ताको यार
तब लगि ताको यार, संग ही सँग में डोलैं
पैसा रहा न पास, यार मुख सों नहिं बोलैं
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई
बिनु बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोइ साईं। 7+7